SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

समकालीन हिंदी कहानियों में पर्यावरण विमर्श

शुभश्री दास, शोधार्थी, हिंदी विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
शुभश्री दास, शोधार्थी
E-mail : subhashreedas4444@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 12/12/2025
Revised on : 13/02/2026
Accepted on : 22/02/2026
Overall Similarity : 00% on 14/02/2026

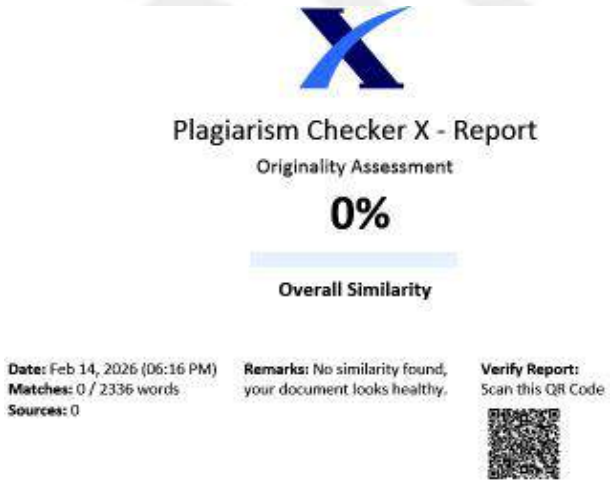

शोध सार

सृष्टि के प्रारंभ में सबसे पहले धरती के ऊपर जंगल और जंगली जानवरों ने जन्म लिए थे। बाद में इन सब के बीच इंसान आए और धीरे–धीरे जंगल,जानवर,परिंदे आदि घटने लगे लेकिन प्रकृति किसी के साथ अन्याय होने नहीं देती। वह इन जंगली जानवरों को इंसानों के अंदर पनाह दे दिया है। अब इंसानों के अंदर जानवर बढ़ रहे हैं, फलस्वरुप मनुष्य अपने लोलुपता और भौतिक स्वार्थ के पूर्ति हेतु प्रकृति का निर्ममता से दहन कर पर्यावरण को दूषित करके खुद के ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है। हमारे चारों ओर की आवरण है पर्यावरण, अर्थात् संपूर्ण सृष्टि का आवरण पर्यावरण कहलाता है जिसके अंदर जीवमंडल, वायुमंडल, बारीमंडल, अश्ममंडल आदि समाहित है। पर्यावरण जीव और उसके चारों ओर उपस्थित भौतिक,रासायनिक,जैविक तथा सामाजिक कारकों का समूह है,जो जीवन और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। मानव और सभी प्राणियों का अस्तित्व पर्यावरण पर ही निर्भर है इसलिए एक स्वच्छ पर्यावरण ही एक स्वस्थ जीवन का आधार है। पर्यावरण के ऊपर बढ़ती संकट के मुद्दे नजर रखे पर्यावरण की सुरक्षा, संरक्षण तथा विकास के लिए उठाए गए आवाज को पर्यावरण विमर्श कहा जा सकता है। पर्यावरण विमर्श एक बौद्धिक और साहित्यिक चर्चा है,जिसमें प्रमुखतः पर्यावरणीय समस्याएं तथा उनके समाधान पर विचार किया जाता है। हिंदी साहित्य में तमाम विमर्शों के भांति पर्यावरण विमर्श भी एक अति महत्वपूर्ण और बिचार योग्य विमर्श है, क्योंकि अगर पर्यावरण है तो ही हम सबका अस्तित्व है,अस्मिता है और अन्य विमर्श भी है। समकालीन कहानीकारों ने बढ़ती पर्यावरणीय संकट के ऊपर अपने गहन चिंता और चेतना को प्रकट करते हुए पर्यावरण के सुरक्षा,संरक्षण तथा विकास के ऊपर कई सराहनीय कहानियां लिखे हैं जो पर्यावरण विमर्श के महत्व और आवश्यकता को दर्शाती है।

मुख्य शब्द

पर्यावरण विमर्श, अस्मिता, भौतिक स्वार्थ, संरक्षण, प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधन, चेतना.

प्रस्तावना

पर्यावरण मानव अस्तित्व का आधार एवं जीवन के सभी आयामों का संवाहक है। 'पर्यावरण' शब्द 'परी'और 'आवरण' शब्द से मिलकर बना है जहां परी का अर्थ है चारों ओर एवं आवरण का अर्थ है घिरा हुआ अतः हमारे चारों ओर से घिरा हुआ आवरण पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण जीव और अजैविक तत्वों का समाहार है,जिसके अंतर्गत समस्त जीव जगत का अस्तित्व,विकास तथा पारस्परिक क्रियाएँ संपन्न होती है।"हमारा शरीर पंचतत्व–पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से बना है। यह पंचतत्व पर्यावरण के अभिन्न अंग है।"[1] पर्यावरण जीवन और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। हमारे चारों ओर मौजूद पेड़–पौधे, नदी, तालाब, पहाड़, मैदान, जीव जंतु, हवा, पानी, मिट्टी, ऊर्जा आदि यह सब पर्यावरण का हिस्सा है। मनुष्य तथा अन्य जीव जंतु जीने के लिए प्रतिदिन इन सभी के ऊपर निर्भर रहते हैं। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति,परंपरा तथा साहित्य में प्रकृति और पर्यावरण एक महत्वपूर्ण कड़ी रहा है। "भारतीय संस्कृति में अग्नि,नदियां,वृक्ष,सूर्य,पशु,पक्षी यदि अनेक प्राकृतिक घटकों को पूज्यनीय माना जाता रहा है। अधिकतर भारतीय पर्व एवं त्यौहार भी प्रकृति से जुड़े हुए हैं,चाहे वे बैसाखी हो या बसंत पंचमी पर्यावरण यहां जीवन की रीढ माना जाता है।"[2] जिंदगी जीने के लिए रोटी, कपड़ा, मकान के अलावा अगर कोई चीज सबसे ज्यादा जरूरत हैं तो वह है स्वस्थ पर्यावरण।

आधुनिक युग में औद्योगिकरण,नगरीकरण और तकनीकी विस्तार ने पर्यावरणीय असंतुलन को जन्म दिया है जिसके परिणाम स्वरुप जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, संसाधनों की कमी और जैव विविधता का विनाश जैसे संकट उत्पन्न हो रहे हैं। मनुष्य अपने भौतिक स्वार्थ,भोगवादी प्रवृत्ति तथा उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण प्राकृतिक संसाधनों को निर्ममता से दहन कर रहा है। पेड़–पौधे, पशु–पक्षियों आदि कई जीवन मूल्यों को अपेक्षा करते हुए मनुष्य प्राकृतिक मर्यादाओं का अतिक्रमण कर पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारण बन गया है जिसके परिणाम स्वरुप अनेक समस्याएं उपज रहे है जो आज संपूर्ण विश्ववासी के लिए चिंता का कारण है।

कहते हैं मनुष्य जन्म लेते समय न कुछ अपने साथ लेकर आता है और न ही मृत्यु के समय अपने साथ कुछ लेकर जाता है लेकिन यह बात संपूर्ण सत्य नहीं है। मनुष्य भले ही जन्म लेते वक्त अपने साथ कुछ लेकर नहीं आया हो परंतु मृत्यु के बाद दहन कार्य स्वरूप एक पेड़ को अवश्य अपने साथ लेकर जाता है। जिस पेड़ की आवश्यकता इस धरा पृष्ठ को सबसे ज्यादा था उसे जला दिया जाता है। न जाने हर रोज कितने ऐसे पेड़ों को मृतकों के साथ जलाया दिया जा रहा है जो पर्यावरण प्रदूषण का एक प्रमुख और चिंतनीय कारण है। हर साल विकास के नाम पर सड़क, रेललाइन, फैक्ट्री, बड़े–बड़े अट्टालिका आदि बनाने के लिए अनगिनत पेड़ों को काटा जा रहा है जिससे हमारे पर्यावरण अपना संतुलन खो रहा है।" इसमें दो राय नहीं है कि वैज्ञानिक और तकनीकी विकास में समूल मानवता के साथ–साथ हमारी पृथ्वी को संभावित समूल विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।"[3]

समाज के हर हलचल हर परिवर्तन का प्रतिबिंब साहित्य के पन्नों पर जीवंत हो उठता है। साहित्य समाज का न केवल दर्पण है बल्कि समाज को दिशा दिखाने वाला दीपक भी है। पर्यावरण की ऐसी दयनीय स्थिति को देखकर साहित्य से भला मुंह कैसे मोड़ सकता है। "अस्मिता की रक्षा हेतु साहित्य में जो वैचारिक एवं तार्किक स्तर पर रचना प्रक्रिया चली उसे विमर्श समझ जाना चाहिए। मुख्य धारा से जो छूटते जा रहे हैं,जिनकी स्थिति दयनीय है, जिनके रक्षा एवं बचाव के लिए साहित्य को रचनात्मक रूप से प्रतिरोध दर्ज करना पड़ रहा है,वही विमर्श के खांचे में है।"[4] साहित्यकार पर्यावरण की इस संकट के कारण और समाधान को वैचारिक और तार्किक रूप से अपने साहित्य में प्रकट करने की प्रक्रिया को पर्यावरण विमर्श कहा जाता है जिसमें प्रकृति की अस्मिता की बात की जाती है। "पर्यावरण आंदोलन के मूल में प्रकृति केंद्रित विचारधारा काम करती है। यह समस्त प्रकृति को विभिन्न चेतन अचेतन वस्तुओं के बीच में एकात्म भाव का दर्शन करता है।"[5] पर्यावरण विमर्श एक वैचारिक और साहित्यिक क्रिया

है, जिसमें पर्यावरणीय संकट,जीव और प्रकृति के मध्य संबंध, संतुलन, संरक्षण तथा विकास के लिए चेतना जागृत करने का कार्य करता है। अगर स्वस्थ पर्यावरण है तो ही हम सबका सत्ता है, अस्तित्व है, अस्मिता है, सम्मान है, अधिकार है। अगर पर्यावरण है तो ही नारी, आदिवासी, दलित, पुरुष, किन्नर, अल्पसंख्यक आदि विमर्श भी है इसीलिए पर्यावरण के ऊपर विमर्श आज हमारे लिए एक अति आवश्यक विषय बन चुका है। आज हम पर्यावरण के प्रश्नों से भाग नहीं सकते।

पर्यावरण प्रदूषण के कई कारण हैं– जैसे बढ़ती आबादी के साथ–साथ उनके जरूरतें तथा विलासमय जीवन जीने की मांग के कारण अनेकानेक उद्योग प्रतिस्थापित किये जा रहे है, कल कारखाने खोले जा रहे है, सड़क पर वाहनों की संख्या बढ़ती जा रही है, मशीनी उपकरणों का प्रयोग भी बढ़ रहा है। खेतों में कीटनाशकों का प्रयोग किया जा रहा है, जिससे वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड आदि जानलेवा गैसों की परिमाण धीरे धीरे बढ़ रही है। फलस्वरुप हमारा पर्यावरण, जल, वायु आदि सब प्रदूषण हो रहे हैं। "औद्योगिक विकास और भौतिक समृद्धि प्राप्त करने के उद्देश्य से आज मानव पर्यावरण के संतुलन को समाप्त करता जा रहा है। वायुमंडल में बढ़ रहे हैं प्रदूषण के फल स्वरुप पृथ्वी की हरियाली क्रमशः समाप्त होती जा रही है।"[6]

समकालीन कहानीकारों ने पर्यावरण की इस बढ़ती संकट के मुद्दे को नजर रखकर उसके कारण और संरक्षण के लिए तथा जन सचेतन स्वरूप कई महत्वपूर्ण कहानीयां लिखे हैं जिनमें से है–एस.आर. हारनोट की कहानी 'एक नदी तड़पती है'। इस कहानी में विकास के नाम पर हो रहे बांधों के निर्माण एवं उससे हो रहे लोगों के विस्थापन का दर्द को वर्णन किया गया है। जिस देश में नदियों को देवी मानकर पूजा किया जाता है, उसी देश में दलालों के हाथों नदियों का सौदा करके बूंद बूंद पानी बेचा जा रहा है। विकास के नाम पर नदियों पर बड़े–बड़े बांधों के निर्माण कर नदियों की गति रोक दी गई है। कारखाने से लेकर घरों तक की सारे वर्जित चीजें, कचरे नदियों में फेके जा रहे हैं। कहानी में नदी तड़प कर मरने की व्यथा गाथा को दिखाते हुए लेखक लिखते हैं:

"नदी धीरे–धीरे कई मिलो तक घाटियों में जैसे स्थिर एवं जड़ हो गई थी। उसका स्वरूप किसी भयंकर कोबरे जैसा दिखाई देता था। मानो किसी ने उसकी हत्या करके मिलो लंबी घाटी में फेक दिया हो। अब न पहले जैसा बहते नदी की पानी का शोर था और न ही कोई हलचल।"

कहानी में सतलज नदी की जिक्र करते हुए इस. आर. हारनोट लिखते हैं:

"सतलज नदी पर बाँध बनाने के लिए लोगों की जमीनें जबरदस्ती खरीदी जा रही थी। गाँव के गाँव विस्थापित कर दिया गया था। सुमन को अब नदी की मीठी आवाज सुनाई नहीं देती। वह देखती है कि नदी किस प्रकार घुट–घुट कर मर रही है।"

प्रदीप जिलवाने की कहानी 'भ्रम के बाहर' में लेखक ने जलपरी के माध्यम से पर्यावरणीय संकट एवं नदियों के विनाश की पीड़ा को व्यक्त किया है। कहानी में जलपरी अपनी व्यथा सुनाते हुए कहती है:

"कल घूमते घूमते नदी से आगे तक निकल गई थी तो वहां पानी इतना विषैला था कि मेरी सांसे लगभग बंद हो गई थी। मैं तत्काल पलट कर भाग आई। थोड़ी दूर वापस आई तो कुछ मछलियों ने बताया कि उधर आगे जाकर बहुत से फैक्ट्री का विषैला रसायन और अपशिष्ट नदी में सीधे जाकर मिलता है जिससे उस तरह की सारी मछलियाँ पानी में हर साल मर जाती हैं।"[7]

जयश्री राय की 'खारा पानी' गोवा के समुद्री जीवन पर आधारित उन मछुआरों की कहानी है, जिनके समुद्र पर अब कंपनी वालों का अधिकार हो गया है। समुद्री मछली पर जीवन यापन करने वाले मछुआरों को विस्थापित होना पड़ रहा है साथ ही बड़े–बड़े जहाज के कचरे और उससे निकलने वाले तेल की वजह से समुद्र का जल दूषित हो रहा है। लेखिका लिखती है:

"सात दिनों से दरिया पानी लिसरा पड़ा है। काले–काले तेल के चकत्तों से भरा हुआ, कहीं दूर बीच समंदर में तेल का जहाज डूबा है। हजारों लीटर तेल हर क्षण पानी में मिल रहा है, लहरों पर तैर कर किनारे तक पहुंच रहा है। जल के जीव मर रहे हैं।"

विकास के नाम पर जिस प्रकार हमने जंगलों का दोहन किया है इसी का दुष्परिणाम है कि आज हमें चक्रवात, बाढ़, भूकंप जैसे प्राकृतिक आपदाओं का शिकार होना पड़ रहा है। रश्मि भार्गव के द्वारा लिखा गया कहानी 'कजरी और एक जंगल' ऐसे ही पर्यावरण के चिंता को केंद्रित करती कहानी है जिसमें कजरी अपने पिता के साथ जंगल के मुहाने पर ही एक झोपड़ी में रहती है। उसे जंगल से बड़ा प्यार है। जंगल से लाए लकड़ियों को बाजार में बेचकर ही उनकी जीविका चलती है लेकिन इस जंगल पर अवैध व्यापारियों की नजर पड़ गई है। वह जानवरों का शिकार करते हैं। पेड़ों को काटकर तस्करी करते हैं। कजरी कहती हैः

"बाबा मैंने पहले भी इनकी जिप्सी में हिरणों के कटे सिर,बाल और खून को देखा था। यह लोग बहुत ही खतरनाक है। इनमें दया तो बिल्कुल ही नहीं है।"

कजरी का गांव और आसपास के गांव जब पूरी तरह तूफान के चपेट में आ जाता है और कई गांव जलमग्न हो जाता है तो कजरी ऐसे तूफान और बाढ़ का कारण भी मनुष्य को ही मानती है। वह कहती हैः

"पता है बाबा, यह जो लोग रातों–रात जंगल और पेड़ काट रहे हैं, यह सब इसी वजह से हो रहा है। तूफान तो पेड़ों के बड़े–बड़े चेहरे से ही डरता है।"

मुरारी शर्मा अपनी कहानी 'प्रेत छाया' में ऐसे ही गांव का चित्रण करते हैं, जहां विकास के नाम पर जंगल का दोहन किया जाता है। देवधाम के नाम पर पहाड़ में मंदिर की स्थापना की जाती है और देखते ही देखते मंदिर के आसपास की भूमि पूंजी पतियों के नाम हो जाती है। विधायक भी इस काम में भरपूर मदद करते हैं।

'जंगल में आतंक' कहानी में हरिराम मीणा ने जंगल की पीड़ा को जंगल की आवाज में ही व्यक्त करते हुए लिखते हैंः

"मेरी धरती पर जितनी वनस्पतियां है, इसकी सतह पर जितना जल है और इसके गर्भ में जितने भी रस एवं रत्न है, उन सब का अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। लोकतंत्र के रथ पर सवार सत्ता का जिस विकास का ध्वज उठाएं पूंजी के बुलडोजर की फौज के साथ मुझे रौंदता हुआ बड़ा चला आ रहा है और उसके पीछे–पीछे पृथ्वी की सारी सभ्यता एक विशालकाय रोड रोलर की मानिंद मेरी छाती पर लुढ़क रही है।"

सूचना क्रांति के इस युग में चारों तरफ विकिरण का जाल फैला हुआ है। मोबाइल के आने से जहां पूरी दुनिया मुठ्ठी में आ गई है वहीं हम पूरी तरह से विकिरण के चपेट में आ गए हैं। आज मैदान से लेकर ऊंचे पहाड़ियों तक हर जगह मोबाइल टावरों की पहुंच हो चुकी है। विकिरण के कारण जहां हम कई बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं, वहीं कई जीवों का जीवन भी नष्ट हो रहे हैं। ऐसी ही विषय पर आधारित कहानी है एस.आर.हरनोट की कहानी 'भागादेवी का चाय घर' यह वैश्वीकरण के उपरांत फैले कंपनियों के मायाजाल से उत्पन्न पर्यावरणीय संकट के ऊपर लिखा गया कहानी है। कहानी में कंपनियों के आने से नदी, झरने, जंगल के विनाश के साथ–साथ मोबाइल टावर के लगने से फैलने वाले विकिरण के दुष्प्रभाव को वर्णन किया गया है।

निष्कर्ष

सोचने की बात यह है कि आज जब पर्यावरण को लेकर संकट मंडराने लगा तभी हम सब पर्यावरण को लेकर चिंता प्रकट कर रहें हैं,अपना आवाज उठा रहे हैं, पर्यावरण विमर्श साहित्य लिखा जा रहा है। लेकिन पहले वैदिक काल में पर्यावरण को लेकर संकट नहीं था तब भी लोग प्रकृति की पूजा करते थे, उसकी गुणगान और वंदना किया जा रहा था। पर्यावरण की संरक्षण में लोग तत्पर थे।

पूरे भारत वर्ष में प्रायः देवा–देवियों के मूर्ति पत्थर,मिट्टी या फिर किसी धातुओं से बनाया जाता है, परंतु हमारे ओडिशा में महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी का मूर्ति दारू यानी पेड़ से बनाया जाता है इसीलिए प्रभु श्री जगन्नाथ जी को दारूब्रम्ह भी कहते हैं। दारू से मूर्ति बनाने के पीछे मान्यता यही है कि महाप्रभु का मूर्ति पेड़ से बने है इसीलिए इस प्रदेश के हर कोई पेड़ों को पूजा करता है और उसका संरक्षण भी करता है जो पर्यावरण संरक्षण का एक बहुत ही सुंदर और अनोखी पहल है।

आज समय आ गया है कि हम सब फिर से प्रकृति की पूजा करके, उसकी संरक्षण और विकास के लिए कदम उठाकर इस पृथ्वी का नागरिक होने का अपना दायित्व और कर्तव्य निभाए। हिंदी के तमाम साहित्यकारों ने अपने जिम्मेदारीयों को समझते हुए पर्यावरण को केंद्र में रख कर साहित्य रचना कर रहे हैं। समकालीन कहानीकारों ने अपने कहानियों के माध्यम से प्रकृति तथा पर्यावरण की अस्मिता के लिए आवाज उठाकर लोगों में सचेतनता लाने का गुरु भार संभाल रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. पांडे, रितिका (2023) पर्यावरणीय चेतना एवं जागरूकता से ओतप्रोत हमारा समकालीन हिंदी साहित्य, गीना देवी शोध संस्थान, वॉल्यूम–11, इशू नंबर–4, मई–2023, पृ. 68।
2. पटेल, ज्योति (2020) समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय अनुशीलन, *जुनी खयात,* वॉल्यूम 10, इशू नंबर–1, जनवरी–दिसंबर, 2020, पृ. 39।
3. श्याम, राधे (2024) भारतीय, मनुष्य के अस्तित्व में पर्यावरण की भूमिका, साहित्य माला ग्रंथ योजना,पर्यावरण विमर्श, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, पृ. 50।
4. मंगलम, कुमार (2023) समकालीन दौरः प्रकृति विमर्श, *संगम,* वॉल्यूम–11, इशू नंबर–4, मई 2023, पृ. 240।
5. इल्लत, प्रभाकरन हेब्बार (2019) *पर्यावरण और समकालीन हिंदी साहित्य,* वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. 48।
6. 'शेष', वासुदेवन (2024) आधुनिक जीवन शैली और पर्यावरण,साहित्यमाला ग्रंथ योजना, पर्यावरण विमर्श, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, पृ. 13।
7. मियां, रहीम (2022) समकालीन हिंदी कहानी में पर्यावरण विमर्श, *अपनी माटी पत्रिका,* अंक–43,जुलाई–सितम्बर 2022, https://share.google/QeaJ40DIkkTSlkhR2, Accessed on 25/10/2025.

––==00==––